Carle Cave Architecture

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna
Paper – III, B.A. 2nd Year

पश्चिमी भारत की गुफाओं में विशेषकर हीनयानी गुफाओं में कार्ले चैत्य का एक महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। कोंकण तथा सह्याद्रि के पूर्वी तटों को जोड़ने वाले प्राचीन मार्ग पर स्थित मोरघाट पहाड़ी में कई पर्वत गुफाएँ है - कोंडाने, भाजा, बेड्स, कार्ले इत्यादि । इनमें सबसे प्रसिद्ध कार्ले गुफा है । प्रारंभिक चैत्यों का सबसे परिपक्व रूप कार्ले में ही देखने को मिलता है । कार्ले गुफाएँ बम्बई - पुना मार्ग पर मुम्बई से 79.50 मील दूर मालावली स्टेशन से 3 मील दक्षिण की ओर स्थित है । यहाँ एक विशाल तथा भव्य चैत्यगृह तथा तीन सामान्य विहार है । स्थापत्य कला के दृष्टिकोण से यह काफी महत्वपूर्ण चैत्यगृह माना जाता है।

चैत्यगृह का बाहरी भाग त्रुटि के कारण अथवा चट्टान के सामने के भाग के गिर जाने के कारण थोड़ा बेडौल सा लगता है । मुधर का दाहिना हिस्सा काफी मात्रा में गिर गया है, या ये कह लें की नष्ट हो चूका है लेकिन मूल रूप से मुधर की कल्पना वेदशां गुफा के मुधर से कर सकते है। मुखमंडप के सामने दोनों ओर स्वतंत्र स्तम्भ खड़े थे । बायें ओर के स्तम्भ से पता चलता है ये मुधर से थोड़ा हटकर था। यह स्तम्भ 50 फुट ऊँचा है । इसकी यष्टि 16 पहलदार है । इसके सिरे पर लहराती पंक्तियों से युक्त चौकी है । इसके सबसे उपर चार महाकाय सिंह चारो दिशाओं में मुह किये हुए पीठ सटाकर बैठे है। इस स्तम्भ पर अशोक के सारनाथ स्तम्भ का प्रभाव नजर आता है । इस स्तम्भ की

अपनी विशेषता जो अन्य स्तम्भों से थोड़ा भिन्न है । अपने सिंह शीर्षक के साथ मानो यह रक्षक की भांति दोनों ओर खड़ा है । दोनों स्तम्भों के बीच छोड़ा हुआ अन्तराल मुखमंडप के लिए प्रदक्षिणा पथ का कार्य करता है ।

मुखमंडल दो तल्ला है जिसका निचला भाग दो अठपहल स्तम्भों पर टिका हुआ है। जिसके नीचे उपर दो सिंह है। उपरी तल चारो स्तम्भों तथा दो पाश्र्व स्तम्भों पर टिका हुआ है। मुखमंडप 17 फुट गहरा तथा 52 फुट लम्बा है जो भीतरी मंडप से 7 फुट अधिक है । मुखमंडप के पिछली भीति पर अन्य गुफाओं की तरह विशालकाय मिथुन मूर्तियाँ पाई गई है, परन्तु कार्ले चैत्य की ये मूर्तियाँ सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। मुखमंडप के दोनों पश्र्वभागों से सम्मुख दर्शन तथा निकली हुई दो गजराज की मूर्तियाँ है। ये मूर्तियाँ अधिष्ठानों पर खड़ी है जिसके नीचे वेदिका अलंकरण की बेल है जिसके उपर अन्य अलंकरणों की शोभा पट्टी है । मुखमंडप के दोनों ओर गवाक्ष तथा वेदिकामय अलंकरण पाया गया है । मुखमंडप में उपरी ताल के पीछे विशाल कीर्तिमुख अथवा गवाक्ष है जो संभवतः सूर्य प्रकाश तथा वायु प्रवेश का कार्य करता होगा।

चैत्यगृह में प्रवेश के लिए तीन द्वार बनें है मध्यद्वार से संभवतः बड़े भिक्षु अथवा पुजारी प्रवेश करते होंगे । प्रवेश के लिए थोड़ा ऊँचा मार्ग बन गया था जिसके नीचे एक हौज की तरह की संरचना जैसी थी जिसमें संभवतः जल रहता होगा ताकि भिक्षुओं का प्रवेश से पहले उनके पैर स्वतः धुल जाये । सम्मुख द्वार से अंतिम छोड़ तक 124 फुट 3 इंच लम्बा, 46.5 फुट चौड़ा तथा 46 फुट ऊँचा था । कार्ले की गुफाओं में स्तंभों पर बुद्ध की मूर्तियां भी है और ब्राम्ही लिपि मे लेख भी उत्कीर्ण है 1 अभिलेख के अनुसार, कार्ले चैत्य का निर्माण पुष्पदत्त ने करवाया,,वही पूर्णता पर पहुचाने का काम सातवाहनों ने किया । मंडप के भी वास्तुशिल्प का प्रभावशाली रूप देखने को मिलता है । मंडप के दोनों

ओर दो पाश्र्वगत प्रदक्षिणापथ है जो 10 फुट चौड़े है । चैत्य के भीतरी भाग के तीन मुख्य भाग - स्तम्भों की कतारें, गजपृष्ठनुमा छत तथा विशाल सूर्य द्वार आपस में तालमेल के साथ स्थित है ।

मंडप के भीतर 37 स्तम्भों की पंक्ति है जिसमें 15 - 15 स्तम्भ मंडप के दोनों ओर पंक्तिबद्ध खड़े है तथा 7 स्तम्भ स्तूप को घेड़े हुए है। इनके बीच की दुरी इनकी चौड़ाई से थोड़ी अधिक है । स्तूप के चारों ओर खड़े स्तम्भ बिना किसी चौकी तथा सिरे के सादा डंडियों के रूप में खड़े है, ये आठ पहल है । जबकि दोनों ओर पंक्तिबद्ध खड़े स्तम्भ काफी अलंकृत है जो द्वार पर खड़े स्तम्भ की नक़ल लगते है । स्तम्भ का मध्य भाग आठ पहल है जिसके उपरी सिरे पर उल्टा पूर्णघट है । अधिष्ठान भाग कमल की लहराती पंखुड़ियों से ढका है । इसके उपर खारेदार चौकी है जिस पर आरोहक दम्पति, गजसंहार आदि विराजमान है । इनके उपर ढोलाकृति तथा मेहराबदार छत है । इसमें लकड़ी की पसलियाँ लगी है । भूमितल से छत की ऊंचाई ४५ फुट है । काष्ट अवशेषों पर कुछ चित्र मिलते है जिससे सम्पूर्ण भीतरी भाग चित्रित होने के साक्ष्य मिलते है । इस चैत्यगृह के भीतर तथा बाहर कई अभिलेख खुदे है। कार्ले चैत्यगृह अपने आप में एक अदभुत उदहारण है । इसके बाद कुछ वर्षों तक चैत्यगृहों का निर्माण कार्य रूका रहा । उसके बाद 180 ई. में कन्हेरी में चैत्यगृहों का निर्माण हुआ जो इस प्रकार के गुफाओं का अंतिम उदाहरण है । यह कार्ले चैत्य की पतनोमुखी नक़ल प्रतीत होती है।

कार्ले में इस महाचैत्य के आलावे तीन विहार गुफाएं भी है जो भिक्षुओं का निवास स्थान था । ये विहार वर्गाकार स्तम्भविहीन है जिसके मध्य भाग में आंगन है । आँगन के चारो ओर भिक्षुओं के सोने के लिए कोठरियां या कोठियां बनी है जिसमे पत्थर की चौकी

लगी है । तीन कोठरियों में एक - एक चौकी तथा एक कोठरी में दोहरी चौकी है । बीच का मंडप ३३ फुट लम्बा है जिसके दोनों ओर आसन तथा चौकियाँ बनी है ।

इस प्रकार हम देखते है कि कार्ले में एक महाचैत्य के आलावा विहारों की भी स्थापना की गई जो चैत्य के पास है तथा इनका निर्माण भी चैत्य के साथ ही किया गया था । कार्ले चैत्य काष्ठ शिल्प तथा पाषाण शिल्प का सुन्दर उदहारण है । इसमें काष्ठ शिल्प तथा चट्टानों में बने तत्वों के बीच अत्यधिक तालमेल देखने को मिलता है ।